



ॐ नमो ब्रह्मणे ॥ अथ हीमनः
ध्वजवाहनविधिर्निश्चयः ॥ चुरि
नयद्रवामननचवकिवायावता
यहोलावधसिजलवातासलीम
धंदावता ॥ यजमानन ॥ ॐ
अद्यादि ॥ यजमानस्य हीमनध्वज
लोहनकलगावर्जनकर्तृसूच्याया
यनिमः ॥ ॐ माहा च का नमः मना

मिति ॥ पूर्य ॥ धनवाक्कलयति
सकलदुष्टं तिसिमाचाउमादियं
देवाय के ॥ यजमानयादोदकोय
कात्य ॥ ॥ तताकर्मरुर्गिगला
यजमानाचम्य ॥ पूर्य राजनस्य
॥ ॥ ॐ सिद्धि नरु क्रिया नरु ॥
ब्राह्मणसमर्थी ॥ ब्राह्मणन ॥ ॐ
अद्यादि ॥ यजमानस्त्वानी ॥ न्यासाय
यावयुजा ॥ आत्मयुजा ॥ ॥ तता
दानावर्जनी ॥ ॐ तत्वायामी तिस्र
ममेलवावाचनसर्वय ॥ ०८ ॥ ॥

ततामयुजयकलगावर्जनी ॥ ॐ अ
जियुक्तनी ॥ ॐ ०० ममगी ॥ ॐ
सितासिने ॥ ॐ यज्जनघसनस्यनी
॥ ॐ वनूगस्यायं तनमसि ॥ ॐ वक्र
यस्तानी ॥ ॐ ०० दीविषु ॥ ॐ नमः
गम्वय ॥ ॐ ध्वजकी ॥ ॐ श्रीयता ॥

५१
इति कलगावर्जनं ॥ ५१ ॥ ५१

ततश्चादियादिग्रहयुजनं ॥ अद्या
यहोलायनाय अद्याय विदेवताय
यादिया न वद कोरययं नैव सम
ऊन ॥ ०० तिनवग्रहावर्जनविधिः ॥

अथ ०० अद्यादिदण्डा कयालयुजा ॥
ॐ गता नमिषुति ॥ १० ॥ अथ यंचल
कयाला ॥ ॐ मनोनांवा ॥ ३ ॥ अथ यं
चवकु ॥ ॐ सद्याजाता ॥ १ ॥ ०० तिर्यचव
कु ॥ ॥ ततश्चतुर्विधयुजनी ॥ सामा
यणीतांगव ०० दमासर्न २ पूर्य २
॥ धान ॥ कृच्छ्रकेयनसंका ॥ १ ॥ अथ
तांगुमलिरुयितं ॥ सुकंदं सत्रिमा
नरु ॥ ध्यातव्यं प्राहिलीयिष्यं ॥ सा
मायणीतांगवध्यानयूर्यनमः ॥ सा
मायणीतांगवणीयव ० चयन ॥ ध्याता
कत ॥ ध्यातयस्यायवात ॥ ध्यातमाला
पूषधूपदीयरुलनेवद्यादिर्मक
त्यसिद्धि नरु ॥ वद ॥ ॐ ०० मंदवा ॥
ॐ श्रीयता ॥ ॐ अयुक्तनमः ॥ ॥ ॥
॥ ॥ जगतीजावद्वताय कलायाउ
गधनि ॥ निवद्वयाय वद्वयाय ह
वद्वयनमाहुत ॥ अथ गंधादि ॥ ०० ति ॥

अथ चित्रजाविद्युजनं ॥ पूर्य ॥ अ

स्थलास्य विवीरुहय ०० दमासुन २
युष्म २॥ ध्यान ॥ ग्यामव (मुमिहावी
य ४ स्वमियातिद्विषय ४। अग्धका
मासदा ध्याय ५। लवा यमिग ४ निवे
४। अग्धका मध्यानयुष्म २॥ चदन
सिद्धनय ५। यवीतधुय दीय ॥ वद
॥ कुंवा क्लमसवितान ॥ ध्याय ॥ वद
जातनमकुसुम कोनवा नां महाच
मसवदवदगिसंयुक्त ॥ अग्धकाम
नमानम ४॥ ॥ अग्धगंधादि ॥

आलय ॥ वलनय ५। यमुरुहय ०० द
मासुन २ युष्म २ ध्यान ॥ दिवा ३। ३
कृता ३। स्व कितिस्य ५। वसं किति
। मतिनलातय ५। हसं ध्यातय ५। वलि
देवत ॥ चदन ५। दि ॥ कुंम दि ५।
लाय ॥ वमिस्य ५। वसं वासा ५। वमि
दानयुय ५। ल ५। कुदवयि ५। नि
यंनमाकु वलिदेवत ॥ अग्धगंधादि ॥

दक्षि ५॥ वासायत ५। अमुरुहय ०० द
मासुन २ युष्म २ ध्यान ॥ यीतवर्ग ५।
तिर्यस्य ५। यमकीवनदं कन ॥ सर्व
गंधार्थवला न ५। ध्याय ५। मासमूनी ५।
न ॥ वासाय ५। ध्यानयुष्म २॥ चदन ५।

॥ वद ॥ कुंय ५। कु मी ॥ लाय ॥ का
यकलतिवर्ग ५। दि ५। कृतेकीयनि
कित ४। अन विज्ञानसुव ५। नम
कुंवासदेवत ॥ अग्धगंधादि ॥ निवे

हनूमतवायुमुरुहय ०० दमासुन २
॥ युष्म २॥ ध्यान ॥ वायुयुगामहावी
थानकवर्ग ५। क्लिलावन ४। विमूल
मूदिकीहला ५। ध्यातय ५। हनूमासुद
॥ चदनादि ५। वद ॥ कुंतीवानयो
थान ॥ लाय ॥ नकवर्ग ५। महावीर्य
वायुयुव ५। क्लिलावन ५। कन्दमूल
रुलपीति ५। हनूमतनमा ५। ह ॥
अग्धगंधादि ॥ ॥ यमि ५॥

विहायलय ५। अका ५। मुरुहय ०० द
मासुन २॥ युष्म २॥ ध्यान ॥ यील
स्यकलसंखर्त ५। कृदमारुयुजध
य ५। गदातय ५। कर्न निख ५। नाकस
न ५। विहायन ५। चदन ५। दि ५। वद ॥
५। नकमारी ५। गति ५। लाय ५। को
लस्यवर्ग ५। सजात ५। लीकाना ५। कृ
तंसदा ५। धीमर्न ५। नाकसावी ५। विहा
यलनमा ५। ह ॥ ॥ अग्धगंधादि ॥

वायुयु ५॥ कपायव ५। अमुरुहय ०० द

मास नं २ यूयं २॥ धन ॥ धन द्वा
ली धृतया लिखितया नमहाद्युति
। हन द्वाजा लज्जामर्कं धातव्यं क
यमेव व॥ चन्दनादि॥ वद॥ ॐ
य ० सहस्रमृषिरि ४॥ क्राय॥ नाज
र्यनमस्तु त्वं हन द्वाजा कलाह
वाका नृत्तनिधयं पुण्यं कयाय
यनमात्मना॥ सुयगं धादि॥ उल्लन

यनं नाना य विष्णु मूर्त्तयः कूद
मास नं २ यूयं २॥ धन ॥ यमेक
ली कलाहर्गं धातव्यं नमस्तु
ति॥ यनं नाम महवन्दयं पुव
नदधामिती॥ चन्दनादि॥ वद॥
ॐ यजायतनं दत्ता॥ क्राय॥
काहवीर्यविनाशययमदमि
कूलाहवः ४ कर्तुनिः ४ दियैय
नयनं नाना यवेनमः ४ सुयगं
धादि॥ ॥ श्रीगणेश ॥ ॥

मार्क १० याय विष्णु मूर्त्तयः कूद
मास नं २ यूयं नमः ४॥ धन ॥ गीन
दिहृनिहावर्गुः प्रविनाशवन
प्रदः ४ क्रायः लयः धनः ४ क्रायः मा
र्क १० यय धायता॥ चन्दनादि॥
वद॥ ॐ मयः मयः यः ४॥ क्रायः॥

वदवदसमायुक्तं कूदयक
नमदाः प्रविनाशनामः ४॥
मार्क १० यमनीधनः ४॥ यय
गं धादि॥ ॥ तानावधयुजनं ॥

ॐ हृत्कस्य वलिष्ठविमयजीव
धादिद्विताहर्गं क्राययथमनर्थ
धियतयसुययि २॥ ॐ वली कस्य
काययविउच्छिक्तं कूदावायुद
वताहवली कायद्वितीयप्रथमि
यनयसुययि २॥ ॐ सली कस्यय
धनयसुययि २॥ ॐ सली कस्यय
काययतायनधधियतयसु
ययि २॥ ॐ महली कस्ययमद
मृषिवहती कूदावहस्यति
द्वितामहली कायवद्वितीय
धियतयसुययि २॥ ॐ जनली
कस्ययममधियकि कूदावन
लदेवताजनली काययवनध
धियतयसुययि २॥ ॐ तयली
कस्यविष्णुमिगर्गिष्टुष्टुद
कूदादवतागतली काययसु
मनधधियतयसुययि २॥ ॐ
सुयली कास्यहनद्विजिज
ता कूदाविष्णुदेवदवतासुय
ली कायसुयमनधधियतयसु

शयि ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 दिति नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 वनस्य यत्कीयति वायुं यत्कीयति वायुं
 दृष्टुं यत्कीयति माहि ॥ ॥

द्धमियुक्तनी॥ ॐ सुर्यस्वाम्युवाच
 वावनस्यति न त्वद्विद्याम्
 (गुनसमस्तो मय न न्याय्यये
 न न कला मदस्मि। यति यव गृहि
 ता वी वृध क ४ दूना ज्ञान मथन

धिनास नस्यता न्य सुखामा ० सुना
 सा मा ॥ श्री ह्रीं युजनी ॥ ॐ श्री ह्रीं यश
 म ॥ दृष वयूजनी ॥ ॐ श्री ग्मा वमम
 लि चम गिन यश्वम यवृता श्वमः
 सिकता श्वम वनस्यत यश्वम हि
 नय्य श्रीम यश्वम ग्मा म श्रीम ला ह
 वम सी स श्रीम यवूश्वम यरून क
 ल्यनी ॥ उत्पल यूजनी ॥ ॐ तत् सत्
 ॥ ॐ श्री न धी यूजनी ॥ ॐ य

धमः वरधिनासु सुदिवा यश्चर्म
 उवना निविष्ठा। अरुपयनहा
 अवविमानहा ता वा इति ४ यदि
 मना ॥ ॐ अरुवा न (थ) अरुमर्का
 अरुमर्गवा नरुम ४। कनी अरु
 नरुता सरुव ४ स कामा यूनरुवा
 मा मित्र वीर्यना ॥ ॐ व (थ) तिष्ठ न
 यति वा जिन यूना य यर कामय

गुरु स्वां धिः ॥ अहिसूना महिमान
 यस्य यग ४ यश्च दनू यकृन्निनः
 मय ॥ ॐ गीवान् क्षात्रान् ॥ ॐ न
 थ आवाहन ० रुचिं न स्मिन् यथा
 यूष्मं निहि तमस्य व म्मः ॥ तथानथ
 समूय सुद्या ० सम ४ विश्वा हावय
 ० समनस्य माना ॥ ॐ देवा वक्षर्य
 ॥ ॐ आ क र्म ॥ ॐ सु फल ययति ॥

यूनः सुच्युता ॥ ध्यान ॥ सकल यन
 धानुर्दया लोकमलक्षत्रिणी न क
 वल्लभमहातजा ॥ अथ श्रीमन्मन्त्र
 विं ॥ वन्दनादि ॥ वन्द ॥ ॐ नमः ॥ ग
 वच ॥ ॐ श्रीदित्य गङ्गायै नमः ॥
 ग्विसहस्रस्य यतिमाविश्वनुर्याय
 निवृद्धिदहनमातारिम ॥ ॐ ॥ १ गता
 यूर्ध्वकपूर्वहित्री यमान ॥ ॐ श्रीकृष्ण
 ॥ ॐ ॥ नमस्तु दिनेभ्यः ॥ अति
 नूपायते नमः ॥ ॐ गङ्गा वल्लभ नूपा
 यतमस्तु नवकृष्णाय नमः ॥

ततो जन्मयत्रिकायुजा ॥ जन्मनसु
 छजविश्वहि नव्यगर्कुषुत्यभिद
 वतायै ०० दुमाहनं २ पूर्यनिमः ॥
 धान ॥ कृष्णाजिनालनासंग ॥ चन्द

नादि॥ वद॥ ॐ तत्सत् ॥ ॐ सत्
जय यः॥ ॐ यूनत्यादित्या॥ साय॥
ॐ तत्सत् ॥ ॐ तत्सत् ॥ ॐ तत्सत् ॥

[illegible]

卷二

[illegible]

माहि ० सा माहिं त्वा म् ॥ ॐ सामस्य
 वा धूमना रिषिं चाम्यः प्रयुजसा
 सूर्यस्य वचसि लु स्य लिय नो कल
 लीं कथयति न थति हि द्युत्यादि ॥
 ॐ वलु मा प्रयुक्त नसू यु ॥ धि व
 गदिवि । नयि मिस गम इल म्यु न
 सह ० इति न ति क नि क द ता ॥ ॐ
 सामा धे नू ० सामा प्रव न मा ० ० सा
 मा व न क म ल्ध द दा ति सा द न्यः
 सि द थ ० सु र यं यि र्ग व लं या
 द दा ग द म् ॥ ॥ ॐ द धि का प्रा ॥
 ॐ दी धा यि स्त्वा ॥ य नि लं द ॥ ॐ व
 सा य वि श म सि ॥ व ता लि ॥ ॐ यु वा
 सू वा सा य नि वा त प्र ग म त् स उ त्से
 या नू र व ति जा य मा न ॥ न धी न
 स ॥ क व य उ न्न य नि सा ॥ धा म न सा
 द व य न ॥ ॥ ॐ ग य उ या
 व ता व त सि हि य रू न यू दू उ रा क
 ॥ ॐ हि न ल्ध ॥ ॥ लू व त ॥ हि न
 ल्ध ग र्ह ॥ ॐ य द दृ क ॥ मा ल स्त्वा न ॥
 ॐ या रु ल नी ॥ ॐ गि स यु व न वि वि ॥

अथ गल य नि यु ज न ॥ ॐ ग ल य नि
 मूरु य ० ० द मा स न २ यूरु य न म ॥
 ॐ ग ल न ॥ ॐ ग ल य ॥ ॐ म न
 म न य य ॥ ग ल य य व न वि वि ॥

सर्व विधिय नि यु ल्ध म् ॥ व ल्या र्ध न ॥

ॐ सु सान क र पा ले य ० द मा स न
 २ यूरु य ॥ ॐ न मा व लु ग म य ॥ ॐ सु
 स र वा ता ॥ ॐ सु स र म्भिक ॥ क र य
 ला र्ध न वि ॥ ॐ त स र्व वि धि य नि यु
 ल्ध म् ॥ ॥ त ता ॥ ग म स यू ज न ॥

ॐ क यि ला दि य ॥ ग म म क र्वा ० द
 मा स न २ यूरु य ॥ ॐ ग र यं जे य वि ॥
 ॐ सु दि ति यो ॥ ॐ मा न सा क ॥ ॐ
 ० ० व ली र्ज ॥ ॐ स म र वा दे या ॥ क यि
 ला दि य ॥ ग म म क र्वा ० त स र्वः
 वि धि य नि यु ल्ध म् ॥ ॥ ॥

वन २

त त ॥ को मा नी यु ज न ॥ ॐ को मा नी
 म यू ना स ना य ग कि रु ला य ० द
 मा स न २ यूरु य न म ॥ ॐ व क य र्ज न
 ॥ ॐ न म ॥ ॐ व वा य वा ॥ ॐ य र वा
 ल ॥ ॐ ० ० दी वि रू ॥ ॐ य स क र्मा
 ॥ ॐ ० ० द वी ॥ ॐ या त व द म् ॥
 ॐ गी र्वा त ॥ को मा नी म यू ना स ना
 य ग कि रु ला य त स र्व वि धि य नि
 यु ल्ध म् ॥

ॐ सु य दि सा ग य स ग ल य नि वा

खनहाय॥ **ॐ स्वस्ति नमः** ॥ क
 लः॥ दिखानतनक ॥ ॐ दमासन
 अर्धवन्दनसिद्धनयः क्रीयतीतयूष
 धूयदीय॥ **ॐ गन्ध** ॥ यूनः ॥ स्वा
 नननकनवग्रहस ॥

लं ३

ॐ अदियादिनवग्रहस्य ॐ दमा
 सनं २५ वर्षं ॥ तगा ६५ ॥ श्रीरवस
 नतः अकनस्य नदं नस्यं कनकं
 त ॥ ॐ अष्टवालाहकाल्य ॥ ॐ
 अष्टादि ॥ ॐ अदियायकलिम
 दः ॥ अष्टवायरायददः कस
 फम्याजोयविश्वरूपेन कनयक
 श्वयः ॥ अष्टवायकलि ॥ जातय
 लीहितवर्णययुवतिमूरवक
 यिलासयद्वा दगभित्तयेमान
 वहलाकनयः अदियादवाधि
 दवतः अष्टवाययुवतिमूरवताम
 यहितवर्णययुवतिमूरवदः ॥
 विनादवतायकनगलसहिता
 य ॐ दमय्यगृहागस्वाहा ॥ ॐ
 वधुकयुष्मकाः ॥ अष्टनकायल
 समयुक्तः ॥ लाकना ॥ अष्टगदी
 यः ॥ अष्टनकायल ॥ अष्टनका
 लादियाद्य ॥ ॥ यूनः ॥ सामोद्यो

ॐ सामायकीनसमूहाहवाय
 वः ॥ अष्टनकायल ॥ अष्टनकाय
 कनिकनकनयः अष्टनकाय
 जातयः अष्टनकायल ॥ अष्टनकाय
 मूरवयिगलाय ॥ अष्टनकाय
 अष्टनकायल ॥ अष्टनकाय
 मदवाधिवनतामाययुवतिमूरव
 वता ॥ अष्टनकायल ॥ अष्टनकाय
 सामदवतायकनगलसहिताय
 ॐ दमय्यगृहागस्वाहा ॥ ॐ हि
 मः ॥ अष्टनकायल ॥ अष्टनकाय
 विवा ॥ अष्टनकायल ॥ अष्टनकाय
 अष्टनकायल ॥ ॐ नमो सामोद्यो

ॐ अष्टनकायल ॥ अष्टनकाय
 हा ॥ अष्टनकायल ॥ अष्टनकाय
 बाहनकायल ॥ अष्टनकाय
 कलियजातयनकवर्णयदकि
 लीहितवर्णययुवतिमूरवक
 दिगीश्वनायल ॥ अष्टनकाय
 यः ॥ अष्टनकायल ॥ अष्टनकाय
 ययुवतिमूरवताम ॥ अष्टनकाय
 अष्टनकायल ॥ अष्टनकाय
 कनगलसहिताय ॥ अष्टनकाय
 हा ॥ अष्टनकायल ॥ अष्टनकाय
 यूनः ॥ सामोद्यो

वानिह्यं कमाना मवक ४ सदा ॥ ०० ॥
मनाय ४ ॥

ॐ वृक्षाय मगध दः ॥ महुवाय केर
कृष्ण दग्धा जाताय धनं न कया
याति ॥ मगधाय वः ॥ मगधाय यथा तव
अथि रुना रिमूख ज ० ना ॥ मय ० ॥
मन दिगो म्वाय धनं ना कतिम
ॐ लाय वृक्षाय वा विदव ता ना नाय
लाय यय विदव ता विदव वृध वि
विषु पुन विषु देव ता स्य कन गल
सहि ताय ०० द मय गृहा लसा हा
॥ नाहि नी गहं संहता ४ कर्तु कान
दलय ४ ॥ सोम पूषा महा गेज
वृध ४ ॥ मनि सय कृ ॥ ०० ति वृक्षाय ४ ॥

ॐ वृक्षाय तय सिधु दः ॥ महुवाय का
मिके कृष्ण का दग्धा जाता या कन
रु ॥ विन कया या गल ॥ मगधाय व
मजा ता यथा तव अथि रुना रिमू
ख निखा मय उरु ना दिगो म्वाय
यमा कतिम ॐ लाय वृक्षाय विद
वा विदव ता वृक्ष ॥ यय विद
व ता यय म दग्धि सयि विषु पुन
वृक्षाय विदव ता स्य कन गल सहि
ताय ०० द मय गृहा लसा हा ॥ सि
वली के लिका का न ॥ सोम पूषा
यदी विरु ४ ॥ देव मली महा ते

जागु न ४ ॥ मनि सय कृ ॥ ०० ति व
हस्य ति म्वाय ४ ॥ यन ४ ॥ काय ४ ॥

ॐ वृक्षाय मगध दः ॥ महुवाय
केर कृष्ण दग्धा जाताय धनं न कया
जाय रोग वि ॥ मगधाय वः ॥ मगधाय
यय कृ व अथि रुना रिमूख हात क
मय यय विदव ता ना नाय वृध न सम
ॐ लाय कत यय का देव विदव ता
गलाय यय विदव ता लाय वनिष्ठ
विषि वृक्ष ४ ॥ क देव ता स्य क
न गल सहि ताय ०० द मय गृहा
लसा हा ॥ काग कृ न्द द्द संहता ४
ॐ कृ व लु विरु ४ ॥ मनि सय
उवानिह्यं देव मली सहा गेवि ४ ॥
०० ति म्वाय क देव वाय ४ ॥ ॥ ॥

ॐ मने म्वाय सो ना कृ दः ॥ महु
वाय माय ४ का कृ म्वा जाता या ना
हिनी न कया या का मय ॥ मगधाय
यय दग्धा जाताय नी ल व अथि यय
विम रिमूख महा गेज मय यय वि
म दिगो म्वाय दी धा कति मु ॥
लाय ग निध देवा विदव ता यमा
यय विदव ता यजा यतय

अथ श्रीकृष्णः ४ ग नैष्ठ
वदेवतायुक्तं न ग ग स हि ता
य ०० द म र्द्य गृहा ग स्वा हा ॥ ॐ न
ला ल्य ल द ल ल्या मा हि न्ना ऊ न
स मा पि वा । ग नैष्ठ व गृह ४ यं सां
स दा ग्मा किं य य क्कु ॥ ०० ति ग नैष्ठ
नार्थः ॥

ॐ ना ह व म ल य द ग्मा रु वा य
का रि क कृ क य कृ मा र्था जा ता
य र न नी न कृ रा य या नी न ग्मा
ग य गृ ह जा त य कृ कृ व कृ य
य पि मा हि मू र्व नो द्वा म य न
०० ति ग नैष्ठ व गृह ४ यं सां
ति मे लु ला य ना इ द वा धि द
व ता का ला य य य धि द व ता स र्वा
य वा म द व र्धि ग य री कृ द्वा न
द दे व ता य कृ न ग ग स हि ता य
०० द म र्द्य गृहा ग स्वा हा ॥ ॐ न
ग मी यू र्मा स का ग्मा नै ला ऊ न
नि र्द ४ स दा ग्मा कि द्वा कृ वा
नि र्द ४ स दा ग्मा कि द्वा कृ वा
०० ति ग नैष्ठ व गृह ४ यं सां
॥ ॥ ॥

ॐ क न व गृ व र्वा ह वा य मा ध
कृ कृ दि ता या यां जा ता या ल्वा न
कृ रा य ऊ मि नि ग्मा ग य गृ ह जा
त य कृ कृ व कृ य य पि मा हि मू र्व

नो द्वा म य वा य वा दि ग नैष्ठ ना य
य मी क ति म लु ला य क कृ द वा
धि द व ता वि र गृ का य य य धि द
व ता व कृ कृ व कृ य पि ग य री कृ द
४ कृ न दे व ता य कृ न ग ग स हि ता
य ०० द म र्द्य गृहा ग स्वा हा ॥ ॐ ति
दू न रू चि ना का ना व क य द्वा नि र्द
पि वा क त वा न क न य मी ४ स दा
ग्मा किं य य क्कु ॥ ०० ति क कृ द वा य ४ ॥

ॐ ज न न स ज न य र वा य स र्वा ला
जा ता य स कृ कृ न कृ रा य स कृ कृ
कृ त य ०० द म र्द्य गृहा ग स्वा हा ॥ ॐ न
धि मा हि मू र्व ना य ज न न दे वा धि द
व ता स कृ कृ य य य धि द व र्वा ता
हि न ल्वा ग र्वा या य कृ न ग ग स हि
ता य ०० द म र्द्य गृहा ग स्वा हा ॥
ज न न व कृ कृ कृ ध न र्द ४ य ॥ ॥
०० व र्वा न सि द्वा न य कृ कृ य द्वा य
य र्थ कृ ध न क ॥ ल य ॥ म ल ॥
॥ ॥ ॐ न मा म र्द्य ४ य या म
किं ल्वा द व ता नां स कृ ल सू र न द
ती थ गे ग दि ता य ४ य कृ कृ व र्वा य
धी हि ४ कृ ल कृ स म य म ४ य स
त य ल व र्वा । वि द्वा नां धं स ४ य ४
कृ ल य वि द्वा र्वा स र्वा य ४ य स

मालिक १

मार्यः॥ ॥ वलं गृहं वाच्यं नृप
तु की नम्र युवती ॥ किं क न तु मल
श्री वृद्धि मति सदा मम ॥ यजमान
सति वलं यं दमर्धं गृहं गत्वा
ह ॥ ॥ ॐ ति वलं यं ॥ ॥

आहा

आसाय मनीयं य विद्याज्ञानस्य सि
धेयं दीयमानमिदं वाच्यं गृहीत्वा
रुलं दीरुव ॥ यजमानस्य ति ॥ यं
सायं दमर्धं गृहं गत्वा ह ॥ ॥

पुल

हनुमत्सूवीराय यनदर्थं ह न
यच ॥ अर्थं कस्मै मया दत्तं विघ्नं
न क नमः ॥ यजमानस्य ति ॥ ह
नुमत् ॥ दमर्धं गृहं गत्वा ह ॥ ॥

मालिक

विहीषणमहावीरलंकणनाथव
धिय ॥ गृहं दत्तं दत्तं यं मम
यार्थं ह न रुव ॥ यजमानस्य ति
विहीषणमयं दमर्धं गृहं गत्वा
ह ॥ ॥ ॐ ति विहीषणमर्थः ॥ ॥

नील

कृपाय वृद्धयुयाय धर्मधनं नय
व ॥ अर्थं दत्तं यं मित्यं यं वृद्धिय
दीरुव ॥ यजमानस्य ति ॥ कृपाय

ॐ दमर्धं गृहं गत्वा ह ॥ ॥ ॐ ति कृपायं ॥
वृद्धय

तस्मै य न तु नामाय मया दत्तं यदीय
त ॥ विघ्नं वरुन नमः य कामार्थसिद्धि
दीरुव ॥ यजमानस्य ति ॥ य न तु
नाम दमर्धं गृहं गत्वा ह ॥ ॥

हनु

सं २

मार्क ॥ य मनीयं य सग्न वा स रुल
यद ॥ अर्थं गृहं गम दत्तं नमः कृपाय
सूवीरुव ॥ यजमानस्य ति ॥ मार्क
युयाय दमर्धं गृहं गत्वा ह ॥ ॥

चद विघ्नं स वाच्यं दमर्धं याच
क ॥ कुं सामाय की नमः दत्तं दत्तं
ति ॥ ॥ वं वचनं सिद्धं नय दत्तं
यर्थं कं धनं क ॥ ॥ कुं नमः ॥

चित्रजाविना ॥ चित्रायुः सजिता
मिर्तं विरद्याता तु यो नृप ॥ कुरु
मा ग्वत्तु मनसः सखं न नमः ॥
॥ यथ हि वलं वानुलाक वलं व
वं वलं ग्वं ॥ तथ विद्व हि मा नि
त्यं देव्यं ह विवचु लं ॥ २ ॥ सर्व
गं स रूता च त कर्तुं कृति
चित ॥ य व कं ता ति गं स रू नमः
या स देव ग ॥ ३ ॥ न क वलं मह

वीनवायूयुयलिलावनल्लदमू
 लहलंयोनहनूमाननमामुगे॥४
 ॥योलल्लकलसंजार्तलंकावास
 किरंसदा।नाकसाधियतिंदवन
 मरुःमुविहायन॥७॥कयाधनू
 यतांलुकासूनीनयवलोमूनिः
 नमामिमनिर्युःगगमूनिउत्तनमा
 म्यहं॥७॥समूहलक०नायतज
 सानलसंकिदः।सनिददतियाया
 निजामदमेनमामुगे॥१॥मार्कः
 लुयामहाता०ममार्कलुयामहा
 मूनिःनमामिसयताहक्याचि
 नजीवनिमामुगे॥७॥॥मूम
 तीशुमहातर्जयुल्लतीककलाध
 नं।हंसासनकिर्तंदवनमाम्य
 मृतनदनं॥मूमर्गधदि॥मल
 लविमूर्जन॥॥दकिता॥म
 गाद्यदि॥लुंवाकलस॥न्यास॥
 विमूर्जन॥॥उद्वयकमस्वयनि॥

धनदीवसादिदानयाचक॥ॐ
 ग्वत्तुमासुर्लथवायुधाय०दमा
 सनं२युष्यं२॥सुष्वत्तुमासुर्लथवा
 ध्रुधाययाखलुचदनं२युष्यंमय
 लायवीतचमययुष्यं२॥कृष्णकृत

जलसहवाक्य॥ श्रीवत्सगीष्टिय४व
 हिणायगर्वकसंस्मि४॥ श्रीमोक्ष
 संयत्नी दहिमर्वद्य दानुत॥ यज
 मानस्यरीमवथावनाहनरुलयाः
 अथमितगुपीवत्स दानदातरीव
 न॥ न ददस्य॥ कृणतिलगुरुय
 तिलियन्ननर्क॥ ॐ अद्या दि॥ यज
 मानस्यरीमवथावनाहनरुलया
 अथमृक॥ अगयमृकनीः
 मृवाप्रलयनजतयठितशिवत्स
 दानंयुयमहंसंयदद॥ वाप्र
 न॥ ॐ सुक्ति॥ ॐ कादा॥ ॐ अद्य
 हियार्थ॥ दक्षिण॥ अगिष्टिदि॥ ॐ
 वाप्रलयसंयितन॥ नमस्तुभ्य ॥
 ॐ धूयधूयसुवासितयि यमदा
 गीत्सुदकहृदविश्वार्थकाप्रन
 वम्ययस्यनिवत॥ श्रीवत्सदानं
 यून॥ यद्रसंस्मितश्चामवर्गुह
 नितरुज॥ कनरासगडाभाचार्य
 मूर्तनमामिसतर्तयधीमयामूर्ति
 यं॥ यथावानस्यादि॥ ॥ अथ
 यद्दामदानं॥ यून॥ वत्स॥ ॥

वलिमूर्खिवाङ्मलय दूदमास

यासमूर्त्यवाक्त्राय ॐ दमासनं
 श्रुष्यं ॥ कर्तुं न वन्दनयीत यः
 यवीतजातीयुष्यं ॥ वाक्त्राय ॥ दधन
 विधुतं नित्यं धर्जं गुरुविनाशनं ॥ न
 स्माद्धजयदाननतर्जयं न वदुः
 वद ॥ १ ॥ तद्धजयदानदातव्यं ॥ ॐ
 य ॥ यजमानस्यति ॥ ॐ यमहंसं प्र
 दद ॥ ॐ कादातु ॥ अक नवी हियारं
 ॥ दकि ॥ अगो वद ॥ ॐ यस्यक

हनुमानमूर्त्युद्धास्य यः शुद्धमा
 सनं ॥ कृष्णमच्यननकयक्षीयवी
 त कनूयुद्धं ॥ वाक् ॥ ॐ दवानां मु
 र्ति कर्तुं मूर्ति दवी मूर्ति गत्वं सर्व
 तीर्थमयं नित्यं दाननशुद्धया लव
 ॥ ५॥ तत्कलशदानदातव्यं ॥ ॐ अथ
 ॥ यजमानस्य गि ॥ ॐ ह्यं स्य दद ॥
 ॐ कादा ॥ सती न कवी हियार्यं ॥
 दक्षिण ॥ आशी वृदि ॥ ॐ गी वानद्या
 वान ॥ साय ॥ या ॥ लीयत्वनकनेग
 नृविनं सौष्ठवमूर्तिरुत्तं धूपमुग्ध
 नृक्षमयि यकर्त्तवा लया ॥ अथ
 ॥ अक्षमूर्ति विगत्तकीर्ति वलवान्
 मखवाच ॥ सदैवामा ॥ गननिनासे
 न छिनयनं नोमीह वाय ॥ ४॥ सतं ॥
 यथावानति ॥ ॥ यून ॥ विहीक्य ॥

धिरीषणमूर्क्यवाङ्मलयच्छद
 मासर्नरं गमनचनचदनवीत
 यक्षीयवीतसुवर्गयुधियुष्यंशः
 वाक्का॥ उंचामनं नरसंघं नृदमद
 सुसमन्वितं। चामनस्यप्रदान
 नचायुर्वृद्धिं कुरुष्वम॥ एतच्चाम
 नदानदातव्यं॥ उंचाम॥ यजः
 मानस्यति॥ उच्यते॥ संप्रदद॥ उंच
 कादात्॥ कालमाद्यवीहियार्ण
 दक्षिणा॥ आगीवदि॥ उंचक
 सारा॥ गमसि॥ कुर्यात्॥ उंचमदला
 चनमांसरागनिवर्गामूर्क्यं
 लालाकंदाने चामनयंकजास
 नसमिद्धं पुष्पय॥ कं कम॥ हस्त
 यस्यगदातिवीर्यनिनद॥ यो
 लक्ष्यवर्गयुति॥ सा यीयुर्वि
 शीषणसावनलोतस्मैतमानि
 वती॥ यथैवानति॥ यूनकया॥

कयमूर्क्यवाङ्मलयच्छद
 मासर्नरं॥ यवदानुचदनव्यत
 पीतयक्ष॥ यवीत॥ एव तयातयू
 र्यं॥ वाक्का॥ उंचक॥ सुवर्गयुधियुष्यं
 लोचनयुगलननुसंस्मिता॥ मलय
 दाननमनिर्यं॥ गकिपूष्टि॥ यय

कुरु॥ एतन्नमस्त्यदानदातव्यं॥ उंच
 अद्य॥ यजमानस्यति॥ उच्यते॥ संप्रदद॥ उंचकादा॥ मासवीहि
 यात्॥ दक्षिणा॥ आगीवदि॥ उंच
 यवसहस्रमयिहिशालेय॥ उंच
 का॥ गमनचनचदनवीत॥ सारा
 मुनिनालिकं॥ ससकं॥ वनदवदा
 नतिलकं॥ वाकागमूर्क्यनिध॥ सा
 नमस्त्ययुगलननुसंस्मिता॥ मलय
 संहिता॥ कानाकुहिन॥ यका
 नरायण॥ श्वत्रमहं॥ कर्प॥ यथ
 वानति॥ ॥ यून॥ यव॥ नामस्य॥

यव॥ नाममूर्क्यवाङ्मलयच्छद
 दमासर्नरं॥ गमनचननीलयक्ष
 यवीत॥ यवीत॥ एव तयातयू
 र्यं॥ वाक्का॥ उंचक॥ सुवर्गयुधियुष्यं
 लोचनयुगलननुसंस्मिता॥ मलय
 दाननमनिर्यं॥ गकिपूष्टि॥ यय
 ॥ उंच॥ अद्य॥ यजमानस्यति॥ उच्यते॥ संप्रदद॥ उंचकादा॥ मासवीहि
 यात्॥ दक्षिणा॥ आगीवदि॥ उंच
 यजायगन॥ कुर्यात्॥ उच्यते॥ नम
 दास्युक्तुलदं॥ वेदुयं॥ गरीनरं
 मुक्तिं॥ विष्णुमय॥ हस्त॥ नृविर्गद
 सुयदानं॥ रवन्॥ सा॥ सा॥ यवन

ॐ हस्त वनदंयंक नूहसंलि
तं नो निशीदकू भन नाम विदितं
विद्या विरुं मव्वेया ॥ यथावा भति ॥

[illegible]

तथा यजमानसूच्यारत्नखन
 स्रय ॥ ॐ ददस्यत्वा ॥ मतदंता
 उचान्वाय ॥ सुगुलयत्रिलोदद
 कस्यत्वाय ॥ ॐ स्वस्तिनामिमाः

गा॥ यलिलंदवि या॥ लुं वसा॥ यवि
 यमसि॥ वतालिविया॥ लुं यूवा॥ सुवा
 सा॥ क्रससा॥ लुं गवउयावनी॥ लुं
 ता॥ लुं हिन॥ वगकी॥ यदन॥ लुं
 यदयक॥ सिद्धन॥ लुं स्व॥ जवि
 दा॥ सुगुता॥ लुं दधि॥ का॥ धी॥ रुला॥
 लुं या॥ रुलनी॥ श्रीगी॥ वदि॥ लुं
 उद॥ यं॥ जा॥ तव॥ दग॥ दव॥ वरु॥ नि॥

धनसकयथजायक॥ यद्वस
 ननद्रसचाकलवायाव्ग्वयम्
 ४० तस्य॥ ॐ यूनूदस्माद्विबूतय
 ००३ ननुमहिमानं॥ एकयदीः
 द्वियदीः त्रियदीः चतुर्थदीः पंच
 दीः षष्ठ्यदीः सप्तयदीः अष्टयदीः
 नवयदीः दश॥ धनत्रयसूयविमू
 यज्ञ॥ ॐ गच्छद्देविहितां॥ नथ
 सदनं॥ वाक्॥ यूप्यदहामुतय
 सां कविद्वाराहनि यनर्थं॥ नथ
 सूयस्यरुदनिता नन॥ दिव्यद्वि
 ४१॥ यदानर्थं समाना हकदाया
 यं यवस्यति॥ मूषा न लिहसदा
 ग्नानानन्दनियद्विकिकने॥ य
 नूययाथवाक्॥ यूप्यदहामुत
 नार्थं कविद्वाराहनि यानर्थं

मह
य
रु
नु
य
व
ध
उ
रु
क
रु
हि
र
ध
यी॥

नमः सुखस्य रुदकि सानादीदिवा
नृपिणी ॥ यधनथं सुमानादीदि
ति ॥ श्रीयाधवा ॥ यजमानस्य
सिकासनमदीसाचकत ॥ काननः
क ॥ श्रीमनथमधियतयसुसयि
दमासननमः सुखं ॥ चंदनमिदु
नयस्यधुयदीया ॥ अद्यवियका ॥ ग
खसइइतर्ह्य ॥ ॐ अद्यवालाहकथ
॥ ॐ अद्यादि ॥ यजमानस्य श्रीमनथ
वलाहननिमिद्यधं ॥ दमद्यं गृहा
लखं हा ॥ गंखकीनाम्युष्यानित्रना
निविविधनिच ॥ श्रीमनथकुसंया
कमिदमद्यनिमानमः ॥ गंखयुजा
॥ ॥ श्रीय ॥ ॐ सुकसकतिवयाति
माससकदिनानिच ॥ तसिनुरीमन
थनामासुद्यययलं गान ॥ न
कासुजासनमः ॥ गंखयुलेकसिंधु
रानुसुमसुजागतामधियं रुजामि
॥ यद्रद्वयोरुयकरंदधतं कनाडे
मनिधुमोतिमनूतं नृविनीतिन
य ॥ अद्यधं ॥ ॥ धनयजमा
नसुयदिद्यनियाचका ॥ दीकाम
लातेसाययजिलिहकातयका ॥
॥ ध्रुवदगनि ॥ वेदे ॥ ॐ ध्रुवमसि
धुवत्वायम् ॥ मिधुवोपियोशाम
यिमर्कत्वादावहस्यनिमयायत्वा

सजावती गतं जाव न द ४ गतं ॥ ध्रुव
खदाभायके ॥ ॥ धनयजमान ॥

सुखविम्वदान ॥ शहितयागिना ॥
यंकलिकानस ॥ दान ॥ यद्रद्वय ॥ ॐ
ति ॥ वा ॥ ॐ द्वादशसुखसिंकागि
यविम्वदानत ॥ काठियरुहल्य
यसुवनि कामानवापूयात् ॥ नतकि
मधुयनियुलुसुखविम्वद्वयल
ससुखं नथदानदागयी ॥ ॐ दद
स ॥ ॐ अद्यवालाहकथ ॥ ॐ अ
द्य ॥ यजमानस्य श्रीमनथवलाह
नरुलपाक्यथ ॥ अमृक ॥ अगोचा
मृकगम ॥ वा ॥ अद्ययसुखसिंकागि
यददे ॥ ॐ सुख ॥ ॐ कादाग ॥ द
क्रिता ॥ अगोचा ॥ अद्य ॥ अद्यसुन
यिनिधुव गलसुयनदुयवानाम
लिरुमयेदिधि ॥ सुवलिं कालेह
वित ॥ सुवसादित्यसंकागि ॥ सुव
नलरुवित ॥ सुसुखं नथदानेनदि
यलाकमवापूयात् ॥ यजमानस्य
श्रीमनथ वलाहनाथनथदाने
दि ॥ अतसु वविधियनियुलुममु ॥
ॐ नितथदानी ॥ ॥ अद्ययदानं
वा ॥ याल ॥ सुवसादित्यसंकागि
वदेहयवकितासोदवीधन

हृदयान्तरे पदार्थ ॥ सोम्यानि वक्र
 वधुनि वननाकु कना निव। रुषिना
 नि दिहृदयानि राना न सं विरो वय
 ॥ दंष्ट्रा कनाल मंष्ट्रं पक्षलया
 वक्रपरी। गङ्गाय वि प्रसंघात मित्र
 मर्मु वि विनय ॥ ॥ उं ॥ हृदय
 यनमः ॥ ॥ हृदयनिदले ॥ ॥ उं ॥ अङ्गीय
 निवसनमः ॥ ॥ हृदयनिदले ॥ ॥ उं ॥
 कुवः स नका लिनी लिखायेनमः ॥
 ॥ हृदये मंष्ट्रदले ॥ ॥ उं ॥ कवचाय
 नमः ॥ ॥ हृदये वायव्यदले ॥ ॥ उं ॥
 गङ्गाय नमः ॥ ॥ हृदये मंष्ट्रदले ॥ ॥ उं ॥
 अङ्गीयनमः ॥ ॥ हृदये पूर्वोत्तरा
 नकवर्गदले ॥ ॥ धनुः मंष्ट्रदले
 दीना ॥ ॥ विषाणमंष्ट्र मंष्ट्रयः ॥ अ
 रुष्यग सिनीयाया ॥ उदगा ॥ अ
 मक्षिया ॥ ॥ उं ॥ शंभुमायनम
 ॥ ॥ हृदये पूर्वदले ॥ ॥ उं ॥ पूर्वमाय
 नमः ॥ ॥ दक्षिणदले ॥ ॥ उं ॥ पूर्व
 स्यगयनमः ॥ ॥ पश्चिमदले ॥ ॥ उं ॥
 हंसा मंष्ट्रयनमः ॥ ॥ हृदये दले ॥
 ॥ उं ॥ अङ्गीयनायनमः ॥ ॥ अङ्गीद
 लाय ॥ ॥ उं ॥ गङ्गायनमः ॥ ॥ नि
 अङ्गीदलाय ॥ ॥ उं ॥ गङ्गायनमः ॥
 वायव्यदलाय ॥ ॥ उं ॥ कंकनवेनम
 ॥ ॥ हृदये मंष्ट्रदले ॥ ॥ ॥

सान्निध्यमूदककारं दूर्ध्वामीकन
 पुरं। उरुगमावनोरासं धुक्कं
 कीनसन्निहं ॥ वक्रममं वक्रं ॥
 नाजावर्धमिहं ॥ ॥ हृदये कना ॥
 नाई कर्तुं धुमादि सन्निहं ॥ कामवृष
 धना ॥ सर्व दिव्यामनविहं ॥ ॥
 वामान्नामकृत्स्नाश्च दकृत्स्ना व
 न्यदा ॥ ॥ ॥ नपूर्वगदानवैयुज
 यित्वा यथा कमी ॥ धूपदीपादिनेव
 ॥ दयै सर्वं स्वयं हिना ॥ मूलम
 कृत्स्नं कृत्स्ना यथा न किं समादिता ॥
 अर्घ्यपाशाग्रनाहं कृत्स्ना नायनि
 वदय ॥ ॥ मुखाग्रमंष्ट्रं निवद
 र्घ्यपाशाग्रं ॥ अर्घ्याय नमः ॥
 हृदये नमः ॥ ॥ समादद्यान्म
 यार्गं सदा नि ॥ ॥ पक्षिदं ॥ हृदये
 वीकमंष्ट्रं ॥ निवस्य निवस्य
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ अङ्गीयनायनम
 ॥ ॥ अङ्गीयनायनमंष्ट्रं वक्रं य
 विनिवदय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ पुनिषा
 य नव निवर्त्तना विधिः ॥

अथ मूल्य देवपुनिषा पकनर्ग लिखा
 र्ग ॥ अथादि ॥ यजमानस्या मूककानाद
 वपुनिषा कर्तुं मूर्ध्नि यार्धनमः ॥ पूषता
 जनस्यर्गनं ॥ सिद्धिदं ॥ आवमर्ग ॥ उरु
 नमः ॥ यथा दत्तं ग्या सार्धं पश्य

पूजास्तु पूजा कं कावय ॥ उदकवलि
प्रदानं ॥ उं नूं गणपयवलि ॥ २०० ॥
उं कौं इ प्रिये ॥ उं कूं कृतया लाय ॥
धूपदीपानंददा ॥ उं कूं अमुं यदु
विमुक्तं ॥ गगनसमुद्रपूजनं ॥ ॥
उं जूं हृदयाय ॥ उं जूं कानसमु
द्राय ॥ ॐ नित्यं ॥ ॥ उं जूं नि
सखा ॥ उं जूं कानसमुद्राय ॥ अक्षी
॥ उं कूं निखाये ०० ॥ उं जूं दयिसमुद्र
ाय ॥ दक्षिणे ॥ ॥ उं कूं कवचाय
॥ उं जूं घनसमुद्राय ॥ निर्मल
॥ उं जूं नगाय ॥ उं जूं सुनागाय
॥ पाश्चिम ॥ उं कूं कवचाय ॥ उं जूं
दक्षसमुद्राय ॥ वायव्य ॥ ॥ उं कूं
निखाये ०० ॥ उं जूं इन्द्रायाय ॥
उरुग ॥ ॥ उं जूं निरस ०० ॥ उं
जूं सिंधुसमुद्राय ॥ ॐ नमः ॥ ॥
नरनादकं ॥ दकं पयगवास्तुम
कुलपूजनं ॥ ॥ दवनिर्मलं ॥ ॥
दय्यं ॥ गगनसमुद्रपूजनं ॥ कमलदेव
सुपनं कावयस्तु वमरा ॥ ॥
यथादवमूलमकुं धान्यकीदिकुल
नतं नरनादकार्यं दकं सुपनं कावय
॥ वदमनं वदुं सुखादि ॥ ॥
ॐ निदवमानं विधिं सुगावकुलाकु
शयं वसुधं वसुधित्वा वायव्ये

हीतादि तं नमः ॥ धनं ॥ उं जूं निवत
त्वाय स्वाहा ॥ उं जूं निवतु स्वाधिपनय
सदां निवाय स्वाहा ॥ उं कूं विद्यागत्वा
य स्वाहा ॥ उं जूं विद्यागत्वाधिपन
य विष्णु स्वाहा ॥ उं जूं आत्मगत्वाय
स्वाहा ॥ उं जूं आत्मगत्वाधिपनय स्वा
हा ॥ ॐ नित्यं ॥ ॥ धनं ॥ ॥
यथादवमूलमकुं गगनसमुद्राय
वदवा ॥ धनं ॥ ॥ गगनसमुद्राय कि
या ॥ ॥ उं जूं हृदयाय ०० ॥ अक्षी
कल्याणा ॥ उं जूं गायत्री ०० ॥ अक्षी
दानं ॥ मूलमकुं ॥ वीर्यं पुदानं ॥ उं कूं
कवचाय स्वाहा ॥ नकापुदानं ॥ उं कूं ह
दयाय ०० ॥ गङ्गाधनं ॥ उं कूं निरस
॥ पूसवनं ॥ उं कूं निखाये ०० ॥ सीम
कावयनं ॥ उं कूं कवचाय ०० ॥ जो
नकर्म ॥ उं कूं नगुण्याय ०० ॥ लाव
नीदद ॥ मूलमकुं गगनसमुद्राय ॥
मूलमकुं गगनसमुद्राय ॥ ॥ गायत्रीम
कुल ॥ सद्यस्तु कनागनी ॥ उं कूं नय
उय ०० ॥ निष्कर्म ॥ उं कूं अमुं य
०० ॥ नामकनरी ॥ यथादवमूलनाम
लिखाद्यनंदद ॥ उं कूं अमुं यदु
०० ॥ इन्द्राय ॥ उं कूं नगुण्याय
०० ॥ अक्षीयानं ॥ उं कूं कवचाय ॥
इन्द्राय ॥ उं कूं निखाये ०० ॥

००॥ कर्तुं हि ॥ ॐ ह्रीं शिवाय ००॥ व
गवधने ॥ गायत्री ॥ गायत्री पुदाने ॥
ॐ ह्रीं हृदयाय ००॥ समावर्तने ॥ ॥
ॐ ह्रीं हृदयाय ००॥ विवाहे ॥ ॥
कन्यादाने ॥ ॐ शुभ वातारु कल्प ॥ ॐ
शादि ॥ यथा नाम्ना दवाय यथा नाम्ना द
वीर्ति मर्द संपुद ॥ ॐ काम ॥
ॐ ह्रीं वरुणे ००॥ ॥ ॐ पुनिकाय
००॥ ॐ निद वद ॥ क्रिया विधि ॥

[illegible]

स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
 वाय स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
 अस्माकं यत्तु स्वाहा ॥ ॥ यथा दक्षाय
 उक्तं नमो भगवते ॥ नमो भगवते ॥

ॐ पापय निष्कामरुवा वद्व विष्णु रुद्र वय
 अथ रुसामानि कृत्वा मि ॐ संमर्यद
 वनायाः पापय निष्कामा विनि याग ॥

भूगर्भकल्प ॥ उच्छ्वासामूकमासमूकच
 क्रमूकनिधौ यथा देवराजीवं न्यासमदं
 कविश ॥ यथा देवस्य सगनीयषडं
 न्यासं कावये ॥ गगनं ननु द्विव ॥ ॥

[illegible]

न नमः॥ हृदि॥ ॐ नमः॥ नमः॥
 वाङ्मनः॥ ॐ नमः॥ नमः॥
 विक्रि॥ ॐ नमः॥ नमः॥
 या॥ ॐ नमः॥ नमः॥
 यादि या नि युगल॥ ॐ नमः॥ नमः॥
 नमः॥ याद युगल॥ ॐ नमः॥ नमः॥
 मः॥ ॐ नमः॥ नमः॥
 अमन॥ ॐ नमः॥ नमः॥
 यापक सर्वा॥ ॐ नमः॥ नमः॥
 यथाद वस्य ध्यानं य॥ ॐ नमः॥ नमः॥
 ॐ धवलाहा नृणां नृमि नि सर्व॥
 पुनः ॐ नमः॥ नमः॥
 ॐ नमः॥ नमः॥
 सूर्य पाणि ॐ नमः॥ नमः॥
 यमनाई काव ॐ नमः॥ नमः॥
 हनिषु नृ॥ सूर्य स्यात्वा नृ ॐ नमः॥ नमः॥
 ॐ नमः॥ नमः॥
 सूर्य विन निषु नृ ॐ नमः॥ नमः॥
 ॐ नमः॥ नमः॥

पुनः ॐ नमः॥ नमः॥
 ॐ नमः॥ नमः॥
 दादाय यथी जीवदानं॥ यमि वयं
 नमः॥ नमः॥
 हृदि यजने शाकली नासाद यद्विष
 नाव ॐ नमः॥ नमः॥
 न॥ ॐ नमः॥ नमः॥

नमः॥ नमः॥
 ॐ नमः॥ नमः॥

नमः॥ नमः॥
 ॐ नमः॥ नमः॥
 कामनया यथा कुरुल कामनार्थं किना
 हवहु॥ ॐ नमः॥ नमः॥
 नमः॥ नमः॥
 ॐ नमः॥ नमः॥
 सुखासन॥ नित्यं हितमदाद व पुनः ॐ नमः॥ नमः॥
 वरुन॥ ॐ नमः॥ नमः॥
 कुले॥ ॐ नमः॥ नमः॥
 वदियं॥ ॐ नमः॥ नमः॥
 सिद्धय॥ ॐ नमः॥ नमः॥
 सफ सागना॥ ॐ नमः॥ नमः॥
 पृथिवी राव॥ ॐ नमः॥ नमः॥
 ॐ नमः॥ नमः॥
 ॐ नमः॥ नमः॥

काला ममूक व॥ ॐ नमः॥ नमः॥
 नाव दानयु॥ ॐ नमः॥ नमः॥
 लकमले के न कर्तु कायी॥ नमः॥ नमः॥
 वाहवर्क निवर्क कर्तु कायी॥ नमः॥ नमः॥
 ना ॐ नमः॥ नमः॥
 नमः॥ नमः॥

मान्यो ३

三

उ विष्णवे नमः॥ एतच्च त्वत्तु॥ सावित्रीं प्रणम्य वक्ष्यामि यादृश्या निनसासकृत्तनादि यादृशीनां तु मनसा
यत्रिकीर्तिता॥ अथिष्टुष्टुश्रुतस्य वनिष्ठा नोत्तमसम्पत्कथयिष्यामि नोत्प्रेतकर्मणा मनिसकलशिरा
दानीकर्मिणो वक्ष्यामि कथिता निरुद्धादीनां यत्तुमादीया दृष्टिरुत्तम न कर्म॥ अनुसूक्तुत्तमो यकीर
हृद्यजगतीतथा॥ अथिष्टुष्टुश्रुतस्य वनिष्ठा नोत्तमसम्पत्कथयिष्यामि नोत्प्रेतकर्मणा मनिसकलशिरा
यादृशीनां तु सवर्ज विनियोगश्चकारिणः॥ विधिमिष्टा मुनिप्रभुत्वा मम तस्यैव तन्ना विविधा सा विद्या धद
विष्णुश्चाग्निवत्वा विदवताश्चिदना सा तु सावित्री यथिष्टुष्टुश्रुतस्य वनिष्ठा नोत्तमसम्पत्कथयिष्यामि नोत्प्रेतकर्मणा
सा यत्तु यत्तु॥ अमाया इति निरर्थगम् यथा निज उक्तम्॥ अथिष्टुष्टुश्रुतस्य वनिष्ठा नोत्तमसम्पत्कथयिष्यामि नोत्प्रेतकर्मणा
मी॥ दवता नमो सिद्धाश्चाक्षरं दाशवेदिशि यथा स्वसाधने चास्य विनियोग उदाहृतः॥ सोवित्री विद

दाक्ष्या यद्गच्छि॥ यथागार्था अग्निवर्तु प्रवृत्ता यत्तु नो कटलेका॥ अथ यत्तु सा मनुष्याश्च यादृश्याः य
कीर्तिता॥ यद्गच्छिदिकयथागच्छिद्विर्तेनायादद्वि एव मता॥ यथिष्टा च तणीया स्यात्तु यथा विरता मता॥
उद्वादि कथं यमादुच्छिद्वा यथा यकीर्तिता॥ अस्मादप्यनां॥ नि गतिरस्या मनीष्यता॥ अगच्छनी
न सा विद्या अकाशा मूदना न नीलनोद्वादि सिद्धयै धर्ममस्तु मयत्तम्य॥ वाक्ये वा यत्तु मयत्तु कर्तु
संयत्तु यं गम॥ निष्ठादीनां निष्ठादि वक्तुं वादि मर्त्यद्विनिष्ठा॥ अर्मा सात्तु कर्तुं गत्या अस्मात्तु यथा
मुनिश्च अस्मात्तु निष्ठादि विष्णुनात्मा यकीर्तिता॥ गत्या॥ अथ अगती नक्तु अथ कर्तुं वेद कटलजिगी॥ अनुसूक्तु
नि कश्चादाग सा यथा यथा एतन्नमः॥ एतन्नामो नोत्तम विशी विद्यस्य कन कुमाग॥ यादृशुक्तु वत्तु च
उदाहृतं यथा के॥ उद्वादिना यत्तु कट व दृष्ट एव च तथैव च॥ कटि यथा एतन्नामो नोत्तम विशी विद

॥ वृत्तान्तः सिद्धिस्तथा ॥ नमस्तु तदावन्ति सिद्धिस्तथा ॥

二

यत्तु न दद्यात् अथ दद्यात् प्रक्रिदाया २॥ दद्यात् द्या द्युक्तानां ॥ ७॥ कुं कुं प्रक्रिदायी नाज द्याया सा ह
॥ ३॥ द्यानादीनां नार्क ॥ ॥ अथ द्यानां नार्क ॥ ७॥ अथ द्या ॥ ७॥ कुं कुं प्रक्रिदायी नाज द्याया सा ह
यत्तु न दद्यात् ॥ ७॥ द्याना द्युक्तानां ॥ सर्वसिद्धिदा ह्यप्यर्क ॥ ७॥ कुं कुं प्रक्रिदायी नाज द्याया सा ह
अन ॥ द्यामशिमो धनं धनं द्यानां नार्क ॥ गस्या द्या ॥ कुं कुं प्रक्रिदायी नाज द्याया सा ह
समिध द्या ॥ ७॥ धनं द्यानां द्यानां नार्क ॥ गस्या द्या ॥ कुं कुं प्रक्रिदायी नाज द्याया सा ह
दद्यात् द्या ॥ ७॥ धनं द्यानां द्यानां नार्क ॥ गस्या द्या ॥ कुं कुं प्रक्रिदायी नाज द्याया सा ह
॥ ७॥ धनं द्यानां द्यानां नार्क ॥ गस्या द्या ॥ कुं कुं प्रक्रिदायी नाज द्याया सा ह
कल्या ॥ ७॥ धनं द्यानां द्यानां नार्क ॥ गस्या द्या ॥ कुं कुं प्रक्रिदायी नाज द्याया सा ह

[illegible]

५०३३३
बिन्दुवर्गः

वक्रदयायेरुनवक्रा यस्मात् ॥ अगानयिथीन ॥ धानप्रधानप्रख्यावक्रदयायेरुनवक्रा यस्मात् ॥
 किमिदं विवकाङ्गनाये गायनवक्रा यस्मात् ॥ टीगानवैधम ॥ मधुसूतायके ॥ एवानवृत्तमन ॥ अक्र
 कनेपी ॥ वक्रा रित्या न ॥ अनमरा गवति कल्मसायेरुनवक्रा यस्मात् ॥ का नि काये य वि म वक्रा
 यधानप्रधानप्रधाना मरवी वक्रदयायेरुनवक्रा यस्मात् ॥ वक्रा यस्मात् ॥ वक्रा यस्मात् ॥ वक्रा यस्मात् ॥
 कायेरुनवक्रा यस्मात् ॥ वक्रा यस्मात् ॥ वक्रा यस्मात् ॥ वक्रा यस्मात् ॥ वक्रा यस्मात् ॥ वक्रा यस्मात् ॥
 यनायनवक्रा यस्मात् ॥ वक्रा यस्मात् ॥ वक्रा यस्मात् ॥ वक्रा यस्मात् ॥ वक्रा यस्मात् ॥ वक्रा यस्मात् ॥
 लिखितकाङ्गनाये गायनवक्रा यस्मात् ॥ वक्रा यस्मात् ॥ वक्रा यस्मात् ॥ वक्रा यस्मात् ॥ वक्रा यस्मात् ॥
 नि ॥ अङ्गना म क न म य स्मात् ॥ वक्रा यस्मात् ॥ वक्रा यस्मात् ॥ वक्रा यस्मात् ॥ वक्रा यस्मात् ॥ वक्रा यस्मात् ॥
 ॥ धन ॥

नालवर्धमहा गीता लामा लामा कर्त्तु ॥ व न प्रद क रु क्तु वा म ग कि कम लुत्तु ॥ जागादि ध्यायन ध्या
 वि विनय वा न ॥ न व वि वि म रु का य म भा व र्त्तु न मा म्हा ॥ अ वि स ध्म न ॥ १ ॥ करे न वा य ॥ न म
 र ग वा नि क म ल यै अङ्गनाये वक्रा यस्मात् ॥ न म र ग वा नि क म ल यै अङ्गनाये वक्रा यस्मात् ॥ अङ्गनाये
 लुत्ता गीता यस्मात् ॥ धन प्र न य गान ॥ अङ्गनाये वक्रा यस्मात् ॥ अङ्गनाये वक्रा यस्मात् ॥ अङ्गनाये
 प्रजर्न ॥ अङ्गनाये वक्रा यस्मात् ॥ अङ्गनाये वक्रा यस्मात् ॥ अङ्गनाये वक्रा यस्मात् ॥ अङ्गनाये वक्रा यस्मात् ॥
 गङ्गनाये वक्रा यस्मात् ॥ अङ्गनाये वक्रा यस्मात् ॥ अङ्गनाये वक्रा यस्मात् ॥ अङ्गनाये वक्रा यस्मात् ॥ अङ्गनाये वक्रा यस्मात् ॥
 कनयाये वक्रा यस्मात् ॥ अङ्गनाये वक्रा यस्मात् ॥ अङ्गनाये वक्रा यस्मात् ॥ अङ्गनाये वक्रा यस्मात् ॥ अङ्गनाये वक्रा यस्मात् ॥
 न ॥ यक्षयवा न च ॥ कङ्क काये विमरु क ल द्या य धि धि म क्तु न व ॥ कङ्क काये विमरु क ल द्या य धि धि म क्तु न व ॥
 ॥ १ ॥ धन

वविष्णुमया रात्रय ॥ धृगविद्दानं ॥ विष्णुवस्त्राह ॥ कलुदधसगयावत्रदमया ध्यानयाय ॥ धृगविद्दानं ॥ ब्रह्म यस्त्राह ॥ भस्त्राह ॥ कलानेयुमस द्यावापथनकेदनेभूभुलवाय ॥ ईसप्रभगासरेनवाय ॥ अस्त्रादिधाकली ॥ कवचनकुशनदीयके ॥ अस्त्रादगाधाय ॥ उक्ताय निरुधिः षधदवद्वाचकी ॥ धनस्यवाक्यना ॥ कलान्निनधृगरागगदद्विगस ॥ अत्रयस्त्राह ॥ दक्षिणेशशुक्रयक्रः ॥ वामरागसग ॥ सामायस्त्राह ॥ वामनेशकभूयक्रः ॥ मधरागसग ॥ अग्नीधमाल्यास्त्राह ॥ धृगरागमधस ॥ मधनेशस ॥ अत्रयस्त्रिषकगयस्त्राह ॥ मधस ॥ धृगराग ३ ॥ उक्ताय धिवाधृगचउवानुस्यधाय ॥ अत्रयस्त्राह ॥ सामायस्त्राह ॥ अग्नीधमाल्यास्त्राह ॥ अत्रयस्त्रिषकग

प२

यस्त्राह ॥ धृगधृगाइति ॥ अर्था ॥ कवचेनावहृणनी ॥ कलान्निननका ॥ अत्राकधनूभूह ॥ यत्रमानधृगावलो कनवांवाहरी ॥ अर्धैर्गोहृनमित्रादि ॥ वक्रविद्यानली ॥ धृवसुलीलावाग ॥ ईदुद्रुकि कस्यैकलदीपायेदीपूर्ववक्राय २ ॥ पूर्वसाम्नां ईवर्वनिरवद्यादक्षिणवक्राय २ ॥ दक्षिणस ॥ कौंकीमर्हंगा नि कार्येयसिमवक्राय २ ॥ दक्षिमस ॥ धानअधानामूखीयद्रुयायेउरुनवक्राय २ ॥ उरुनस ॥ नमोरुगवतिद्रुक्रमलायेण्डुवक्राय २ ॥ किमिजिलिविचकाक्षनोये ॥ यनायनवक्राय २ ॥ मधस ॥ ईदुद्रुकि कस्यैकलदीपाये ॥ धृववक्राय जांजां ईवर्वनिरवद्यादक्षिणवक्रायस्त्राह ॥ ॥ वीगानेयीगधनधृगधन ॥ जांजां ईवर्वनिरवद्यादक्षिणवक्राय कौंकीमर्हंगा नि कार्येयसिमवक्रायस्त्राह ॥ यंगानयादूने ॥ कौंकीमर्हंगा नि कार्येयसिमवक्राय दधानेअधानेअधानामूखी

[illegible][illegible]

[illegible]

गवति कुंकुटिका यैर्जां जां दूधान् अथान् अथानाम् रवी क्वां क्वां किं विविधं ॥ धर्मे अहं गि दृगा इति ॥
दश भगवत्सिद्धिर्मे गत्वा यत्नात् ॥ मासा इति ॥ ५ ॥ अहं न वा यत् ॥ कुंकुटिका यैर्दूधान् अथान् अथानाम् रवी क्वां क्वां किं विविधं ॥
काय ॥ २ ॥ निभार गवति कुंकुम लयैर्जां दूधान् अथान् अथानाम् रवी क्वां क्वां किं विविधं ॥
वक्रय द्वा द्विभूति मुहूर्त यत् ॥ किं विविधं का क्वां यत् ॥ अथान् अथानाम् रवी क्वां क्वां किं विविधं ॥
तिद्वि मल यैर्जां दूधान् अथान् अथानाम् रवी क्वां क्वां किं विविधं ॥ अथान् अथानाम् रवी क्वां क्वां किं विविधं ॥
कना यैर्जां दूधान् अथान् अथानाम् रवी क्वां क्वां किं विविधं ॥ अथान् अथानाम् रवी क्वां क्वां किं विविधं ॥
हुं यत्नात् ॥ किं विविधं का क्वां यत् ॥ अथान् अथानाम् रवी क्वां क्वां किं विविधं ॥
॥ किं विविधं का क्वां यत् ॥ अथान् अथानाम् रवी क्वां क्वां किं विविधं ॥

[illegible]

पाशादकनकाशुर्मिथा करी ॥ अशुला ॥ शमसिं गनमकु ॥ न विद्या कला ये ॥ दक्षिण उरुन लायकी गन
 ॥ जल निवृत्ति कला ये ॥ य विमन पूर्व हायकी गन ॥ ३ ॥ वेद निद्या कला ये ॥ उरुन हा दक्षिण लायकी गन ॥ ४ ॥
 भाकि कला ये ॥ पूर्व न पा विमहायकी गन ॥ ५ ॥ यादव न वि कला गने ॥ ६ ॥ आत्म गलाय ॥ ७ ॥ विद्या गलाय
 २ ॥ ८ ॥ निवगलाय ॥ ९ ॥ ग सिद्ध नडा जामला नक्काय ॥ १० ॥ पूर्व न ॥ ११ ॥ रत्ना काय न मश ॥ १२ ॥ वला काय ॥ १३
 सुला काय ॥ १४ ॥ महला काय ॥ १५ ॥ ज नला काय ॥ १६ ॥ ग दला काय ॥ १७ ॥ सुखला काय ॥ १८ ॥ धन द्रुस गला
 मसिं दूजन ॥ १९ ॥ मधुसूजा ॥ २० ॥ रंग रंग गला ये ॥ २१ ॥ मय गी ॥ २२ ॥ नम रग वनि ॥ २३ ॥ कृष्ण को ये ॥ २४ ॥
 धन अशान अशान मय ॥ २५ ॥ की की विद्वत् सर्व गलाय ॥ २६ ॥ मिधुला ॥ २७ ॥ मूल रवठी न दूजा ॥ २८ ॥ आवा द्रुयानि
 मूजा ॥ २९ ॥ गग सिंगु द्वाया ॥ ३० ॥ मय का न धवा का ॥ ३१ ॥ वरु ॥ ३२ ॥ ॐ गा उ न दूति काया व रुति मलास ग

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

[illegible]

दिग्ब्रह्म त्रिक दश॥ कात्यायनी॥ महिषमर्दिनी॥ यैवम्बुद्विन्दवा॥ उदयनीर्मंगला काली च० ॥ मू
 लनावा॥ अरूपाया च॥ उदित्वा॥ शारुतीया॥ उदयनी नमो हने० ॥ दिग्ब्रह्म चर्मर्दि॥ शक॥ ॥
 यवधवा॥ अरूपाया च॥ उदित्वा॥ शारुतीया॥ उदयनी नमो हने० ॥ दिग्ब्रह्म चर्मर्दि॥ शक॥ ॥
 माहृषनी॥ कात्यायनी॥ कृमाना॥ मूला॥ वेधनी॥ प्रका॥ वानादी॥ खानवा॥ उदयनी॥ मोहा॥ चामुखा॥ नमो हने० ॥
 मरुतल्लो॥ ॥ यवधवा॥ अरूपाया च॥ उदित्वा॥ शारुतीया॥ उदयनी नमो हने० ॥ दिग्ब्रह्म चर्मर्दि॥ शक॥ ॥
 नमरुतल्लो॥ सुधका लो॥ मूल॥ गणेश॥ उदित्वा॥ अरूपाया च॥ उदयनी नमो हने० ॥ दिग्ब्रह्म चर्मर्दि॥ शक॥ ॥
 नाया॥ नमो हने॥ गणेश॥ उदित्वा॥ अरूपाया च॥ उदयनी नमो हने० ॥ दिग्ब्रह्म चर्मर्दि॥ शक॥ ॥
 लोममता॥ अरूपाया च॥ उदित्वा॥ शारुतीया॥ उदयनी नमो हने० ॥ दिग्ब्रह्म चर्मर्दि॥ शक॥ ॥

[illegible]

2175 I

[illegible]